शरद जोशी

QD57EZ

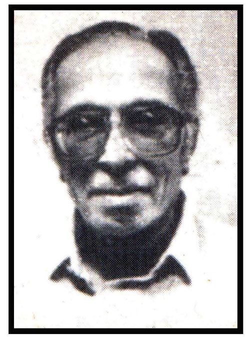

शरद जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में 21 मई 1931 ई० को हुआ । इनका बचपन कई शहरों में बीता । कुछ समय तक सरकारी नौकरी में रहने के बाद इन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया । इन्होंने आरंभ में कुछ कहानियाँ लिखीं, फिर पूरी तरह व्यंग्य लेखन ही करने लगे । इन्होंने व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कॉलम के अतिरिक्त हास्य-व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ और संवाद भी लिखे । हिंदी व्यंग्य को प्रतिष्ठा दिलाने वाले प्रमुख व्यंग्यकारों में शरद जोशी भी एक हैं । सन् 1991 में इनका देहांत हो गया ।

शरद जोशी की प्रमुख व्यंग्य कृतियाँ हैं – 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'तिलस्म', 'रहा किनारे बैठ', 'दूसरी सतह', 'प्रतिदिन' । दो व्यंग्य नाटक हैं – 'अंधों का हाथी' और 'एक था गधा' । एक उपन्यास है – 'मैं, मैं, केवल मैं, उर्फ कमलमुख बी० ए०' ।

शरद जोशी की भाषा अत्यंत सरल और सहज है । मुहावरों और हास-परिहास का हलका स्पर्श देकर इन्होंने अपनी रचनाओं को अधिक रोचक बनाया है । धर्म, अध्यात्म, राजनीति, सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत आचरण, कुछ भी शरद जोशी की पैनी नजर से बच नहीं सका है । इन्होंने अपनी व्यंग्य रचनाओं में समाज में पाई जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है । पाठक इस चित्रण को पढ़कर चकित भी होता है और बहुत कुछ सोचने को विवश भी ।

प्रस्तुत पाठ 'रेल-यात्रा' में शरद जोशी ने भारतीय रेल की अस्त-व्यस्तता, अव्यवस्था के बहाने भारतीय राजव्यवस्था की पोल खोली है । भारतीय समाज और राजनीति के चाल-चरित्र को समझने में यह व्यंग्य हमारी मदद करता है ।

रेल-यात्रा

रेल विभाग के मंत्री कहते हैं कि भारतीय रेलें तेजी से प्रगति कर रही हैं । ठीक कहते हैं । रेलें हमेशा प्रगति करती हैं । वे मुंबई से प्रगति करती हुई दिल्ली तक चली जाती हैं और वहाँ से प्रगति करती हुई मुंबई तक आ जाती हैं । अब यह दूसरी बात है कि वे बीच में कहीं भी रुक जाती हैं और लेट पहुँचती हैं । पर अब देखिए ना, प्रगति की राह में रोड़े कहाँ नहीं आते । राजनीतिक पार्टियों के रास्ते में आते हैं, देश के रास्ते में आते हैं, तो यह तो बिचारी रेल है । आप रेल की प्रगति देखना चाहते हैं, तो किसी डिब्बे में घुस जाइए । बिना गहराई में घुसे आप सच्चाई को महसूस नहीं कर सकते ।

हमारे यहाँ कहा जाता है - ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें । आप पूछ सकते हैं कि इस छोटी-सी रोजमर्रा की बात में ईश्वर को क्यों घसीटा जाता है ? पर जरा सोचिए, रेल की यात्रा में ईश्वर के सिवा आपका है कौन ? एक वही तो है, जिसका नाम लेकर आप भीड़ में जगह बनाते हैं । भारतीय रेलों में तो यह है आत्मा सो परमात्मा और परमात्मा सो आत्मा ! अगर ईश्वर आपके साथ है, टिकिट आपके हाथ है, पास में सामान कम और जेब में पैसा ज्यादा है, तो आप मंजिल तक पहुँच जाएँगे, फिर चाहे बर्थ मिले न मिले । अरे, भारतीय रेलों का काम तो कर्म करना है । फल की चिंता वह नहीं करती । रेलों का काम एक जगह से दूसरी जगह जाना है । यात्री की जो भी दशा हो । जिंदा रहे या मुर्दा, भारतीय रेलों का काम उसे पहुँचा देना भर है । अरे जिसे जाना है, वह तो जाएगा । बर्थ पर लेटकर जाएगा, पैर पसारकर कर जाएगा । जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किस्म के बल हैं, उसे यात्रा करने से नहीं रोक सकता । वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं। ट्रेन स्टार्ट हो जाती है और वे सामान लिए दरवाजे के पास खड़े रहते हैं । भारतीय रेलें हमें जीवन जीना सिखाती हैं । जो चढ़ गया उसकी जगह, जो बैठ गया उसकी सीट, जो लेट गया उसकी बर्थ। अगर आप यह सब कर सकते हैं, तो अपने राज्य के मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं । भारतीय रेलें तो साफ कहती हैं - जिसमें दम, उसके हम । आत्मबल चाहिए मित्रो ! जब रेलें नहीं चली थीं, यात्राएँ कितनी कष्टप्रद थीं । आज रेलें चल रही हैं, यात्राएँ फिर भी इतनी कष्टप्रद हैं । यह कितनी खुशी की बात है कि प्रगति के कारण हमने अपना इतिहास नहीं छोड़ा । दुर्दशा तब भी थी, दुर्दशा आज भी है । ये रेलें, ये हवाई जहाज, यह सब विदेशी हैं । ये न हमारा चरित्र बदल सकती हैं और न भाग्य ।

भारतीय रेलों ने एक बात सिद्ध कर दी है कि बड़े आराम की मंजिलें छोटे आराम से तय होती हैं । और बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है । जैसे आप ससुराल जा रहे हैं, महीने-भर पहले आरक्षण करा लिया है, घंटा-भर पहले स्टेशन पहुँच गए हैं, बर्थ पर बिस्तर फैला दिया है और रेल उस दिशा में दौड़ने लगी है, जिस दिशा में आपकी ससुराल है । ससुराल बड़ा आराम है, आरक्षण छोटा आराम है । बड़े आराम की मंजिल छोटे आराम से तय होती है ।

इसी तरह बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है । मानिए आपके बाप मर गए । (माफ कीजिए, मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ । भगवान उनकी उमर लंबी करे अगर वे पहले ही न मर गए हों तो ।) आप खबर सुनते हैं और अपने गाँव जाने के लिए फौरन रेल में चढ़ जाते हैं। भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज । आप सबकुछ सहन करते खड़े हैं । पिताजी जो मर गए हैं । बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है ।

मैं एक उदाहरण देता हूँ । मानिए एक कुँवारे लड़के को उसका दोस्त कहता है कि जिस लड़की से तुम्हारी शादी की बात चल रही है, वह होशंगाबाद अपने मामा के घर आई है, देखना चाहो तो फौरन जाकर देख आओ । आरक्षण का समय नहीं है । कुँवारा लड़का आव देखता है न ताव और रेल के डिब्बे में चढ़ जाता है । वही भीड़, धक्का-मुक्का, थुक्का-फजीहत, गाली-गलौज । मगर क्या करे ? लड़की से शादी जो करनी है, जिंदगी भर के लिए मुसीबत जो उठानी है । बड़ी पीड़ा के सामने छोटी पीड़ा नगण्य है ।

भारतीय रेलें चिंतन के विकास में बड़ा योगदान देती हैं । प्राचीन मनीषियों ने कहा है कि जीवन की अंतिम यात्रा में मनुष्य खाली हाथ रहता है । क्यों भैया ? पृथ्वी से स्वर्ग तक या नरक तक भी रेलें चलती हैं । जाने वालों की भीड़ बहुत ज्यादा है । भारतीय रेलें भी हमें यही सिखाती हैं । सामान रख दो तो बैठोगे कहाँ ? बैठ जाओगे तो सामान कहाँ रखोगे ? दोनों कर दोगे तो दूसरा कहाँ बैठेगा ? वो बैठ गया तो तुम कहाँ खड़े रहोगे ? खड़े हो गए तो सामान कहाँ रहेगा ? इसलिए असली यात्री वो, जो खाली हाथ । टिकिट का वजन उठाना भी जिसे कबूल नहीं । प्राचीन ऋषि-मुनियों ने ये स्थिति मरने के बाद बताई है । भारतीय रेलें चाहती हैं, वह जीते-जी आ जाए। चरम स्थिति, परम हलकी अवस्था, खाली हाथ, बिना बिस्तर, मिल जा बेटा अनंत में, सारी रेलों को अंततः ऊपर जाना है ।

टिकिट क्या है ? देह धरे को दंड है । मुंबई की लोकल ट्रेन में, भीड़ से दबे, कोने में सिमटे यात्री को जब अपनी देह भारी लगती है, वह सोचता है कि यह शरीर न होता, केवल आत्मा होती, तो कितने सुख से यात्रा करती । भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं । कोई नहीं कह सकता कि रेल में चढ़ने के बाद वह कहाँ उतरेगा ? अस्पताल में या श्मशान में । लोग रेलों की आलोचना करते हैं । अरे रेल चल रही है और आप उसमें जीवित बैठे हैं, यह अपने में कम उपलब्धि नहीं है।

रेल-यात्रा करते हुए हम अक्सर विचारों में डूब जाते हैं । विचारों के अतिरिक्त वहाँ कुछ

डूबने को होता भी नहीं । रेल कहीं भी खड़ी हो जाती है । खड़ी है तो बस खड़ी है । जैसे कोई औरत पिया के इंतजार में खड़ी है । उधर प्लेटफॉर्म पर यात्री खड़े इसका इंतजार कर रहे हैं । यह जंगल में खड़ी पता नहीं किसका इंतजार कर रही है । खिड़की से चेहरा टिकाए हम सोचते रहते हैं । पास बैठा यात्री पूछता है – ''कहिए साहब, आपका क्या ख्याल है, इस कंट्री का कोई फ्यूचर है या नहीं ?''

''पता नहीं ।'' आप कहते हैं, ''अभी तो ये सोचिए कि इस ट्रेन का कोई फ्यूचर है या नहीं'' ?

फिर एकाएक रेल को मूड आ जाता है और वह चल पड़ती है । आप हिलते–डुलते, किसी सुंदर स्त्री का चेहरा देखते चल पड़ते हैं । फिर किसी स्टेशन पर वह सुंदर स्त्री भी उतर जाती है । एकाएक लगता है, सारी रेल खाली हो गई । मन करता है हम भी उतर जाएँ । पर भारतीय रेलों में आदमी अपने टिकिट से मजबूर होता है । जिसका जहाँ का टिकिट होता है, वह वहीं तो उतरेगा । उस सुंदर स्त्री का यहाँ का टिकिट था, वह यहाँ उतर गई । हमारा आगे का टिकिट है, हम वहाँ उतरेंगे ।

भारतीय रेलें कहीं–न–कहीं हमारे मन को छूती हैं । वह मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती हैं । एक ऊँघता हुआ यात्री दूसरे ऊँघते हुए यात्री के कंधे पर टिकने लगता है । बताइए ऐसी निकटता भारतीय रेलों के अतिरिक्त कहाँ देखने को मिलेगी ? आधी रात को, ऊपर की बर्थ पर लेटा यात्री, नीचे की बर्थ पर लेटे यात्री से पूछता है – यह कौन–सा स्टेशन है ? तबीयत होती है कहूँ – अबे चुपचाप सो, क्यों डिस्टर्ब करता है ? मगर नहीं वह भारतीय रेल का यात्री है और मातृभूमि पर यात्रा कर रहा है । वह जानना चाहता है कि इस समय एक भारतीय रेल ने कहाँ तक प्रगति कर ली है ?

आधी रात के घुप्प अँधेरे में मैं मातृभूमि को पहचानने का प्रयत्न करता हूँ । पता नहीं किस अनजाने स्टेशन के अनचाहे सिगनल पर भाग्य की रेल रुकी खड़ी है । ऊपर की बर्थ वाला अपने प्रश्न को दोहराता है । मैं अपनी खामोशी को दोहराता हूँ । भारतीय रेलें हमें सहिष्णु बनाती हैं । उत्तेजन के क्षणों में शांत रहना सिखाती हैं । मनुष्य की यही प्रगति है ।

भारतीय रेलें आगे बढ़ रही हैं । भारतीय मनुष्य आगे बढ़ रहा है । आपने भारतीय मनुष्य को भारतीय रेल के पीछे भागते देखा होगा । उसे पायदान से लटके, डिब्बे की छत पर बैठे, भारतीय रेलों के साथ प्रगति करते देखा होगा । कई बार मुझे लगता है कि भारतीय मनुष्य भारतीय रेलों से भी आगे है । आगे–आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे–पीछे रेल आ रही है । अगर इसी तरह रेल पीछे आती रही, तो भारतीय मनुष्य के पास सिवाय बढ़ते रहने के कोई रास्ता नहीं रहेगा । बढ़ते रहो – रेल में सफर करते, दिन झगड़ते, रात–भर जागते, बढ़ते रहो । रेलनिशात् सर्व भूतानां ! जो संयमी होते हैं, वे रात–भर जागते हैं । भारतीय रेलों की यही प्रगति है, जब तक एक्सीडेंट न हो, हमें जागते रहना है ।

अभ्यास

पाठ के साथ

1. मनुष्य की प्रगति और भारतीय रेल की प्रगति में लेखक क्या देखता है ?
2. ''आप रेल की प्रगति देखना चाहते हैं तो किसी डिब्बे में घुस जाइए'' - लेखक यह कहकर क्या दिखाना चाहता है ?
3. भारतीय रेलें हमें किस तरह का जीवन जीना सिखाती हैं ?
4. 'ईश्वर आपकी यात्रा सफल करें ।' इस कथन से लेखक पाठकों को भारतीय रेल की किस अव्यवस्था से परिचित कराना चाहता है ?
5. ''जिसमें मनोबल है, आत्मबल, शारीरिक बल और दूसरे किस्म के बल हैं, उसे यात्रा करने से कोई नहीं रोक सकता । वे जो शराफत और अनिर्णय के मारे होते हैं, वे क्यू में खड़े रहते हैं, वेटिंग लिस्ट में पड़े रहते हैं ।'' यहाँ पर लेखक ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था के एक बहुत बड़े सत्य को उद्घाटित किया है 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' । इस पर अपने विचार संक्षेप में व्यक्त कीजिए ।
6. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करें-
   (क) 'दुर्दशा तब भी थी, दुर्दशा आज भी है । ये रेलें, ये हवाई जहाज, यह सब विदेशी हैं । ये न हमारा चरित्र बदल सकती हैं और न भाग्य ।'
   (ख) 'भारतीय रेलें हमें सहिष्णु बनाती हैं । उत्तेजना के क्षणों में शांत रहना सिखाती हैं । मनुष्य की यही प्रगति है ।'
   (ग) 'भारतीय रेलें हमें मृत्यु का दर्शन समझाती हैं और अक्सर पटरी से उतरकर उसकी महत्ता का भी अनुभव करा देती हैं ।'
   (घ) 'कई बार मुझे लगता है भारतीय मनुष्य भारतीय रेलों से भी आगे है । आगे-आगे मनुष्य बढ़ रहा है, पीछे-पीछे रेल आ रही है ।'
7. रेल-यात्रा के दौरान किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है ? पठित पाठ के आधार पर बताइए ।
8. लेखक अपने व्यंग्य में भारतीय रेल की अव्यवस्था का एक पूरा चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है । पठित पाठ के आधार पर भारतीय रेल की कुछ अव्यवस्थाओं का जिक्र करें ।
9. 'रेल विभाग के मंत्री कहते हैं कि भारतीय रेलें तेजी से प्रगति कर रही हैं । ठीक कहते हैं ! रेलें हमेशा प्रगति करती हैं ।' इस व्यंग्य के माध्यम से लेखक भारतीय राजनीति व राजनेताओं का कौन-सा पक्ष दिखाना चाहता है । अपने शब्दों में बताइए ।
10. संपूर्ण पाठ से व्यंग्य के स्थल और वाक्य चुनिए और उनके व्यंग्यात्मक आशय स्पष्ट कीजिए ।
11. इस पाठ में व्यंग्य की दोहरी धार है – एक विभिन्न वस्तुओं और विषयों की ओर तो दूसरी अपनी अर्थात् भारतीय जन की ओर । पाठ से उदाहरण देते हुए यह प्रमाणित कीजिए ।

12. भारतीय रेलें चिंतन के विकास में योगदान देती हैं । कैसे ? व्यंग्यकार की दृष्टि से विचार कीजिए ।
13. टिकिट को लेखक ने 'देह धरे को दंड' क्यों कहा है ?
14. किस अर्थ में रेलें मनुष्य को मनुष्य के करीब लाती हैं ?
15. "जब तक एक्सीडेंट न हो हमें जागते रहना है" लेखक ऐसा क्यों कहता है ?

पाठ के आस-पास

1. लेखक ने भारतीय रेल की अव्यवस्थित यात्रा पर व्यंग्य किया है । कई बार आपने भी ऐसी यात्राएँ की होंगी, जिनमें आपको धक्का-मुक्की, परेशानियाँ उठानी पड़ी होंगी । आप अपना अनुभव अपने शब्दों में लिखिए ।
2. 'रेल-यात्रा' में लेखक भारतीय रेल की अव्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं । आपको यह व्यंग्य कितना प्रभावित करता है और क्यों ? संक्षेप में बताइए ।
3. होशंगाबाद कहाँ है ? लेखक उसका जिक्र क्यों करता है ?
4. बिहार के मानचित्र में सभी रेलमार्गों को चिह्नित करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों से विदेशज शब्दों को छाँटिए –
   रोजमर्रा, मंत्री, अनंत, सीट, स्टेशन, चिंतन, बर्थ, लोकल, यात्री, ईश्वर, स्टार्ट, फौरन, थुक्का-फजीहत, कबूल, प्राचीन, काम, हाथ, शराफत
2. निम्नांकित वाक्यों में अव्यय को रेखांकित करें –
   (क) अरे जिसे जाना है, वह तो जाएगा ।
   (ख) सारी रेलों को अंततः ऊपर जाना है ।
   (ग) उधर प्लेटफॉर्म पर यात्री खड़े इसका इंतजार कर रहे हैं ।
   (घ) जो संयमी होते हैं, वे रातभर जागते हैं ।
   (च) मगर क्या करें ?
   (छ) इसलिए असली यात्री वो, जो हो खाली हाथ ।
3. निम्नांकित शब्दों का विग्रह करें एवं समास बताएँ –
   रेलयात्रा, रेल विभाग, अनंत, अनचाहा, अनजाना
4. निम्नांकित तद्भव शब्दों का तत्सम रूप लिखिए –
   पुराना, गाँव, हाथ, काम, हल्दी

शब्द निधि :

रोजमर्रा	:	प्रतिदिन, दैनंदिन	क्यू	:	कतार, पंक्ति
मनोबल	:	मन का बल	मंजिलें	:	गंतव्य स्थान
शराफत	:	अच्छाई, सभ्य, सज्जनता	नगण्य	:	नाचीज, तुच्छ
अनिर्णय	:	निर्णयहीनता की अवस्था	घुप्प अँधेरे	:	घना अँधेरा, गहरा अँधेरा